Printed Pages – 7

H-05

B.A. (Part-I) Examination, 2019

हिन्दी साहित्य

Paper - II

हिन्दी कथा साहित्य

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 75

Minimum Pass Marks : 25

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्नों के सम्मुख उनके अंक दर्शाए गए हैं।

Q. 1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) "दस-दस, बीस-बीस रूपये पाने वाले क्लर्कों को देखता हूँ, जो सड़ी हुई कोठरियों में पशुओं की भाँति जीवन काटते हैं, जिन्हें सबेरे का जलपान तक मयस्सर नहीं होता, उन पर भी गहनों की सनक सवार रहती है। इस प्रथा से हमारा सर्वनाश होता जा रहा है। मैं तो कहता हूँ, यह गुलामी पराधीनता से कहीं बढ़कर है। इसके

कारण हमारा कितना आत्मिक, नैतिक, दैहिक, आर्थिक और धार्मिक पतन हो रहा है, इसका अनुमान ब्रह्मा भी नहीं कर सकते।" 10

अथवा

"चम्पा ! मैं ईश्वर को नहीं मानता, मैं पाप को नहीं मानता, मैं दया को नहीं समझ सकता, मैं उस लोक में विश्वास नहीं करता पर मुझे अपने हृदय में एक दुर्बल अंश पर श्रद्धा ले चली है। तुम न जाने कैसे बहकी हुई तारिका के समान मेरे शून्य में उदित हो गई हो। आलोक की एक कोमल रेखा इस निबिड़ तम में मुस्कुराने लगी। पशु बल और धन के उपासक के मन में किसी शांत और कान्त कामना की हँसी खिलखिलाने लगी पर मैं न हँस सका।"

(ख) "चोर से ज्यादा फिक्र थी आबरू की। किवाड़ न रहे पर्दा ही आबरू का रखवाला था। वह पर्दा भी तार-तार होते एक रात आँधी में किसी भी हालत में लटकने लायक न रह गया। दूसरे दिन घर की एकमात्र पुश्तैनी चीज दरी दरवाजे पर लटक गई।" 10

अथवा

"मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों में छल-छल आँसू बहने लगे। दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछती, पर वे बार-बार उमड़ आते, जैसे वर्षों का बाँध तोड़कर उमड़ आये हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की। बार-बार आँखें बन्द की, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।"

(ग) उन दिनों एक अजब वैराग्य की भावना उसके मन मस्तिष्क पर छाने लगी। कोई किसी का नहीं है, सब अपने-अपने मतलब के हैं। उन्हीं बच्चों के लिए उन्होंने क्या-क्या मुसीबतें नहीं उठाई ? आज कोई कभी सोचता तक नहीं कि बुड्ढा मर गया या जिन्दा है ? नीचे बैठे-बैठे वे सारे दिन गीता के तरह-तरह के भाषण और श्रीमद्भागवत पढ़ते रहते और मन ही मन प्रतीक्षा किया करते कि माफी माँगते हुए मालती का पत्र आयेगा।" **10**

अथवा

"बस यही बात है देवर! अब मेरा यहाँ कौन है! मेरा मरद तो मर गया। जीते-जी मैंने उसकी चाकरी की, उसके नाते उसके सब अपनों की चाकरी बजाई। पर जब मालिक ही न रहा, तो काहे को हड़कम्प उठाऊँ ? यह लड़के, यह बहुएँ! मैं इनकी गुलामी नहीं करूँगी।"

Q. 2. "मुंशी प्रेमचन्द का 'गबन' आदर्शोन्मुख यथार्थवादी रचना है।" इस कथन का औचित्य स्पष्ट कीजिए। **10**

अथवा

कहानी के तत्वों के आधार पर 'आकाश दीप' का विश्लेषण कीजिए।

Q. 3. 'मलबे का मालिक' कहानी का सारांश लिखकर उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। **10**

अथवा

'चीफ की दावत' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

Q. 4. किन्हीं तीन पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : **15**

(1) उपेन्द्र नाथ अश्क की साहित्यिक उपलब्धियों पर प्रकाश डालिए।

(2) शिवानी का साहित्यिक परिचय दीजिए।

(3) बालशौरी रेड्डी की महत्वपूर्ण रचनाएँ।

(4) कफन शीर्षक का औचित्य।

(5) सिरचन की कारीगरी।

Q. 5. निम्नलिखित में से किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर अति संक्षेप में लिखिए : **10**

(1) 'गबन' उपन्यास की नायिका कौन है ?

(2) 'आकाशदीप' के नायक का नाम लिखिए ?

(3) 'परदा' कहानी समाज के किस वर्ग से सम्बद्ध है ?

(4) कहानी के कितने तत्व होते हैं ?

(5) लमही गाँव में किस लेखक का जन्म हुआ था ?

(6) शामनाथ किस कहानी का पात्र है ?

(7) 'शीतल पाटी' बनाने वाले कलाकार का नाम लिखिए ?

(8) मालती किस कहानी की नायिका है ?

(9) 'चिरागदीन' किस कहानी का पात्र है ?

(10) 'गबन' उपन्यास में गबन कौन करता है ?

(11) शबरी उपन्यास के लेखक कौन हैं ?

(12) 'काले साहब' के लेखक का नाम लिखिए ?

(13) रक्खा पहलवान ने किसको मौत के घाट उतारा ?

(14) बुधिया किसकी पत्नी है ?

(15) देवीदीन किस रचना का पात्र है ?